# पं. दीनदयाल उपाध्याय

## चित्रावली

100 जन्म शताब्दी वर्ष

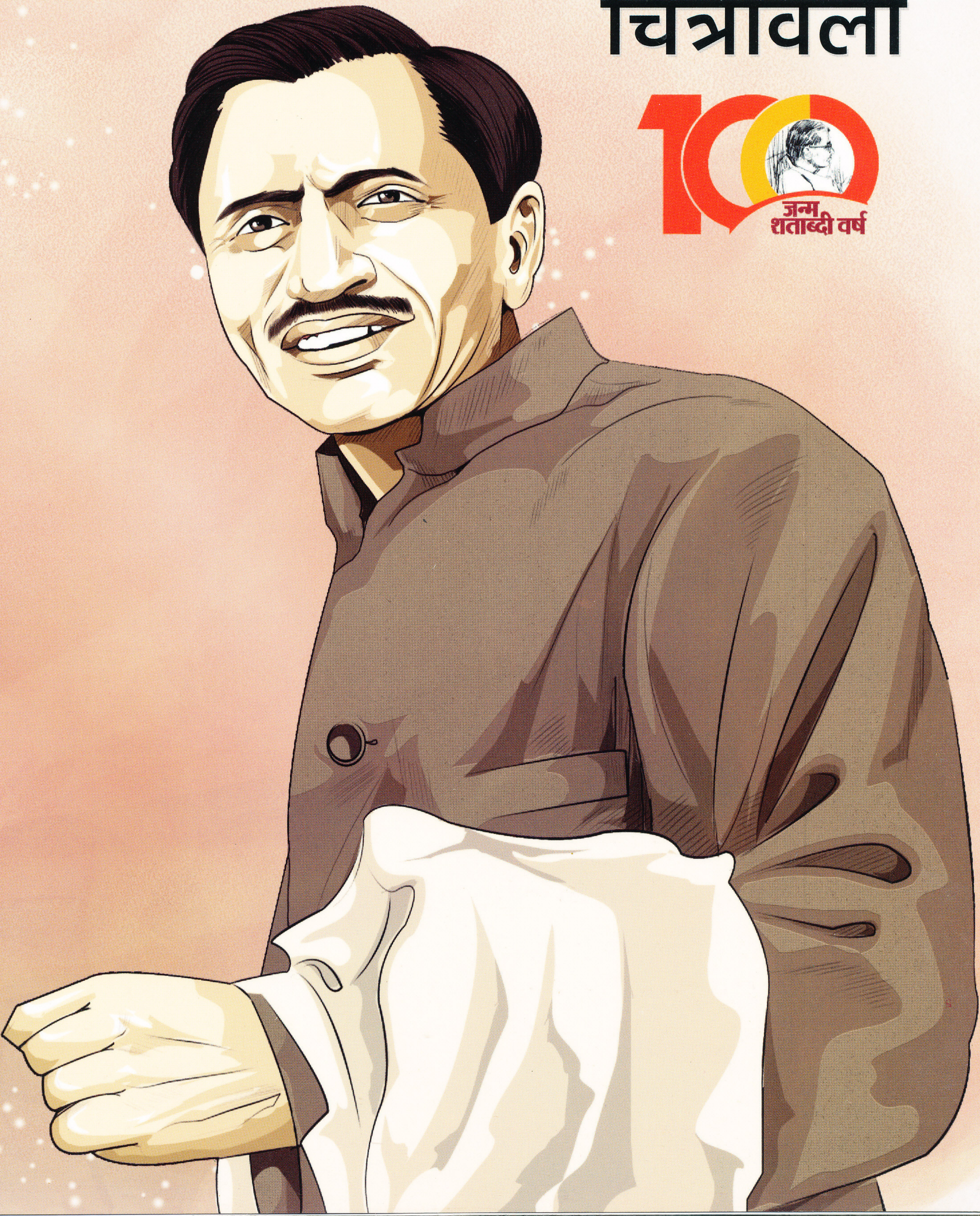

# पं. दीनदयाल उपाध्याय

पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर, 1916 ई. (तदनुसार आश्विन कृ. त्रयोदशी वि.सं. 1973) को उत्तर प्रदेश के मथुरा जनपद अंतर्गत नगला चंद्रभान नामक ग्राम में हुआ था।

विषम परिस्थितियों में दीनदयाल उपाध्याय ने जूनियर हाई स्कूल (अजमेर बोर्ड), इंटरमीडिएट (बिड़ला कॉलेज, पिलानी) और एम.ए. प्रथम वर्ष (सेंट जोंस कॉलेज, आगरा) की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान पाकर उत्तीर्ण कीं। दुर्भाग्यवश अपनी बीमार बहन की सेवा में रहने के कारण एम.ए. (द्वितीय वर्ष) की परीक्षा नहीं दे सके। वे एक बार प्रशासनिक सेवा की प्रतियोगिता में शामिल हुए और उनका चयन भी हो गया, किंतु उन्होंने विदेशी सरकार की नौकरी न करने का निश्चय किया। कुछ समय पश्चात् उन्होंने बी.टी. का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

वे सनातन धर्म डिग्री कॉलेज, कानपुर में बी.ए. के छात्र थे, वहीं पर वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए और स्वयंसेवक बने। उन्होंने संघ के आजीवन व्रती प्रचारक बनकर राष्ट्रसेवा करने की शपथ ली। लखीमपुर जिले में 1942 में उन्होंने प्रचारक के रूप में जीवन-यात्रा का श्रीगणेश किया। सन् 1945 में वे उ.प्र. के सह-प्रांत प्रचारक बने।

भारतीय इतिहास के सांस्कृतिक गौरव को उजागर करते हुए उन्होंने अत्यल्प समय में 'सम्राट् चंद्रगुप्त' नामक उपन्यास की रचना की। 'जगद्गुरु शंकराचार्य' उपन्यास की प्रस्तुति भी विशिष्ट शैली में है। राष्ट्रवाद-संबंधी आपकी विपुल कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। 'भारतीय अर्थ-नीति—विकास की एक दिशा' उनके आर्थिक चिंतन का एक प्रसाद है। 'राष्ट्र चिंतन' तथा 'राष्ट्र जीवन की दिशा' राष्ट्र, समाज, राजनीति, धर्मनीति तथा संस्कृति पर समय-समय पर लिखे, उनके लेखों एवं भाषणों के संग्रह हैं।

11 फरवरी, 1968 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनका पार्थिव शरीर मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर पाया गया। उनकी हत्या की जाँच चली, परंतु हत्यारों का पता नहीं चला।

भारत वर्श की पावन ब्रज वनस्थली में एक महान एकात्म चिंतक ने जन्म लिया, जिसने विश्व में भारत का, भारत में मथुरा का, और मथुरा में एक छोटे से गांव नगला चन्द्रभान का मान बढ़ा दिया। इसी गांव के एक विद्वान परिवार के भगवती प्रसाद उपाध्याय घर की विशम आर्थिक स्थिति के कारण अपने गांव से दूर रेलवे में नौकरी करते हैं। लेकिन आज के शुभ अवसर पर छुट्टी लेकर घर आए हैं।

धीरे–धीरे बालक बढने लगा। उसका छोटा भाई शिबू भी मां की गोद में आ चुका था–
मॉः– इसकी मुस्कान कितनी भोली और किलकारी कितनी निर्भिक है।
भगवती प्रसादः– रामप्यारी तुम्हें कुछ दिन मायके में रहना होगा। मैं घर के कुछ सदस्यों के साथ अपनी नौकरी वाले स्थान जलेसर में रहूंगा। पारिवारिक स्थिति ठीक होते ही तुम्हें बुला लूंगा।

दीना का ननिहाल आगरा में फतेहपुर सीकरी के पास था। उसके नाना और मामा स्टेशन मास्टर थे। नानी उसे बहुत स्नेह करती थीं। दीना अपने ममेरे भाईयों के साथ खेलता खाता पलता रहा।
अचानक एक दिन–
नानाजीः– भगवती प्रसाद नहीं रहे। उनकी संदेहजनक स्थिति में मृत्यु हुई है। बेटी पता नहीं हमारे भाग्य में क्या लिखा है। लेकिन जब तक मैं हूं, तुम खुद को और बच्चों को अनाथ मत समझना।
किन्तु रामप्यारी यह दुःख बरदाश्त नहीं कर पायीं और क्षय रोग का शिकार हो गयी।
7 वर्ष के दीना एवं 5 वर्ष के शीबू को छोड़कर वह भी चल बसीं।
नानाजी नानी सेः– मां के जाने के बाद से बच्चे बहुत उदास रहते हैं। मैने निर्णय किया है कि रेलवे की नौकरी छोड़कर बच्चों को खुद पालूंगा। तुम और इनकी मामी इन्हें स्नेह दो।

बालक दीनदयाल अपनों की छत्रछाया में साहस पूर्ण व्यक्तित्व में गढ़ने लगे। इसी बीच एक घटना घटी।
रात्रि के 11 बजे थे। दीना अपनी मामी की गोद में बैठे थे। घर की अन्य महिलाएं भी वहीं थी। तभी अचानक 10—12 डाकुओं के गिरोह ने घर पर आक्रमण कर दिया।
इस बालक को गोदी से उतारो। घर के सभी आभूशण हमारे हवाले कर दो।
नन्हा दीना बिल्कुल नहीं घबराया—
हमने सुना था कि डाकू गरीबों की रक्षा के लिए अमीरों का धन लूटते हैं। किन्तु तुम तो मुझ गरीब को ही मार रहे हो।
इस बच्चे की वाणी की सच्चाई और साहस के आगे मैं नतमस्तक हूं। चलो वापस चलो।

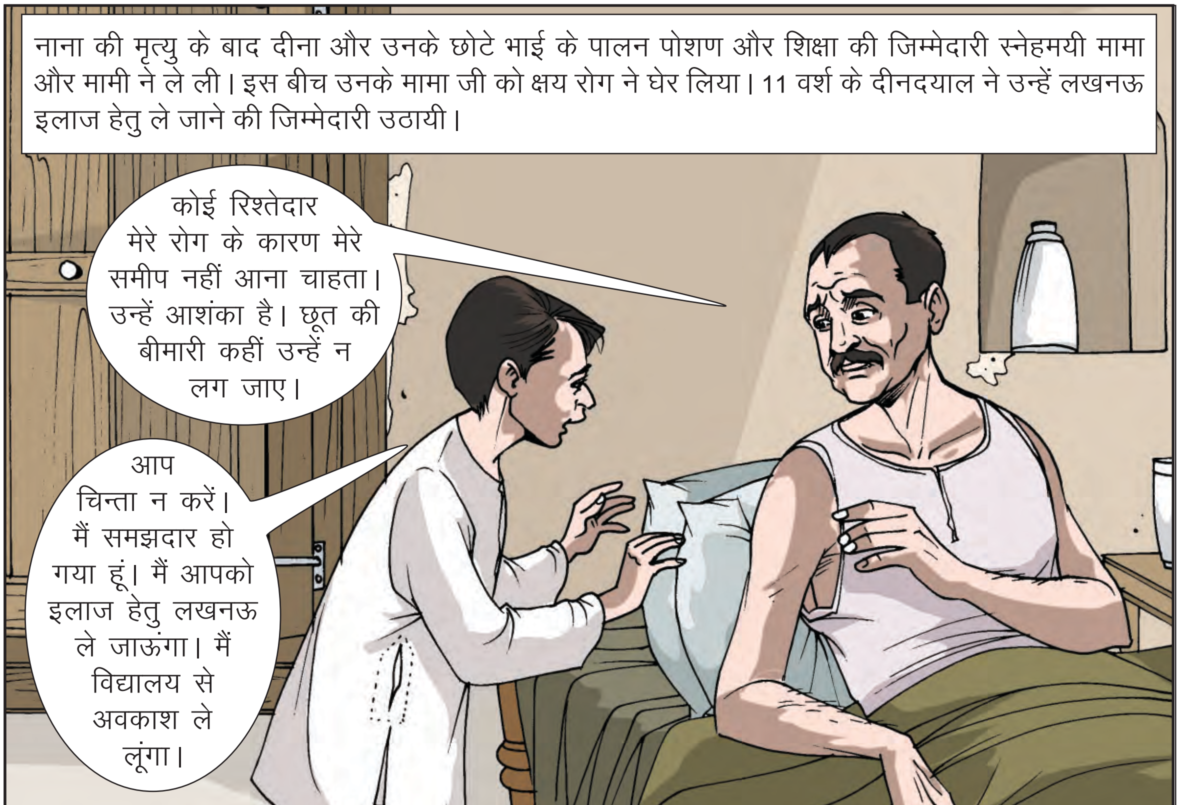
नाना की मृत्यु के बाद दीना और उनके छोटे भाई के पालन पोशण और शिक्षा की जिम्मेदारी स्नेहमयी मामा और मामी ने ले ली। इस बीच उनके मामा जी को क्षय रोग ने घेर लिया। 11 वर्श के दीनदयाल ने उन्हें लखनऊ इलाज हेतु ले जाने की जिम्मेदारी उठायी।
कोई रिश्तेदार मेरे रोग के कारण मेरे समीप नहीं आना चाहता। उन्हें आशंका है। छूत की बीमारी कहीं उन्हें न लग जाए।
आप चिन्ता न करें। मैं समझदार हो गया हूं। मैं आपको इलाज हेतु लखनऊ ले जाऊंगा। मैं विद्यालय से अवकाश ले लूंगा।

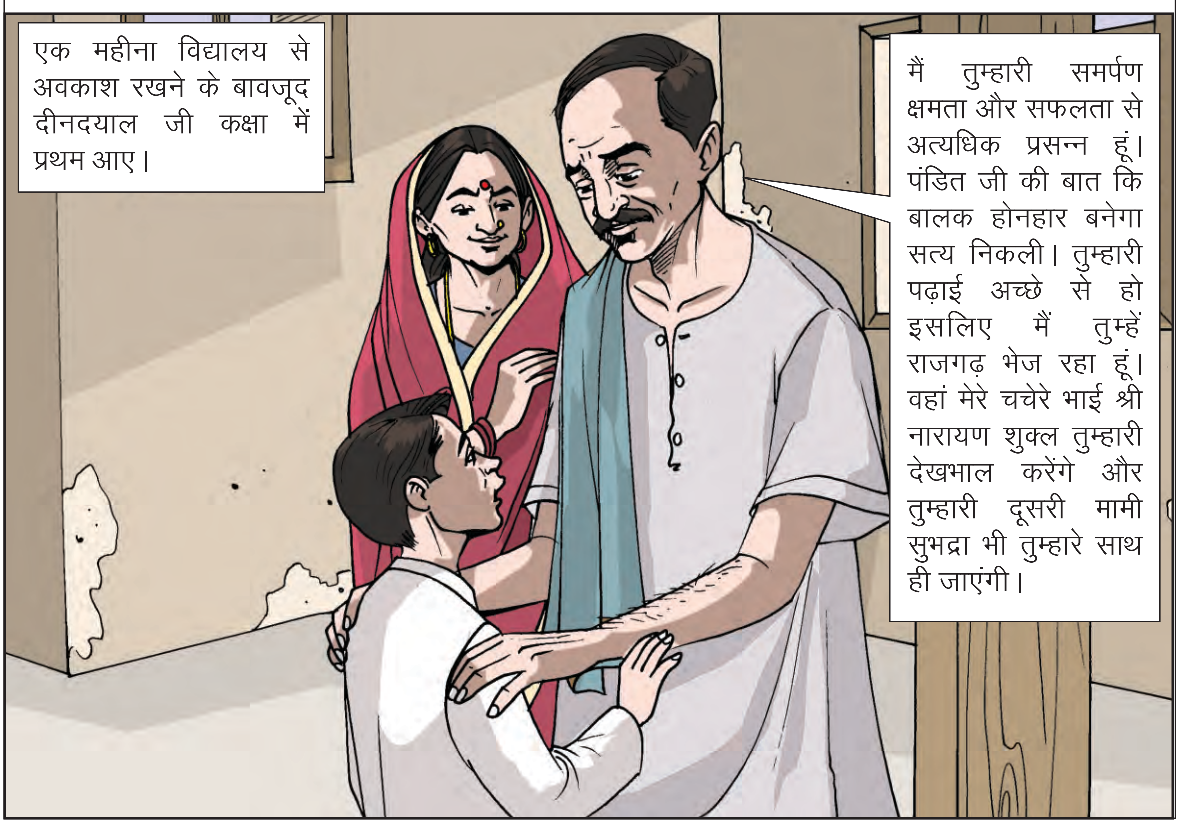
एक महीना विद्यालय से अवकाश रखने के बावजूद दीनदयाल जी कक्षा में प्रथम आए।
मैं तुम्हारी समर्पण क्षमता और सफलता से अत्यधिक प्रसन्न हूं। पंडित जी की बात कि बालक होनहार बनेगा सत्य निकली। तुम्हारी पढ़ाई अच्छे से हो इसलिए मैं तुम्हें राजगढ़ भेज रहा हूं। वहां मेरे चचेरे भाई श्री नारायण शुक्ल तुम्हारी देखभाल करेंगे और तुम्हारी दूसरी मामी सुभद्रा भी तुम्हारे साथ ही जाएंगी।

दीनदयाल जी अपनी कक्षा में तो प्रथम आते ही थे कभी कभी उच्च कक्षा के सवालों को भी हल करने के लिए उन्हें बुलाया जाता था।
इस प्रश्न को अन्य विधियों से भी हल किया जा सकता है। एक विधि तो प्रचलित ही है। मैंने दूसरी विधि से भी प्रयास किया तो सवाल का हल निकल आया।
तुम्हारी प्रतिभा चमत्कारिक है और मन में बिल्कुल अहंकार नहीं है।
चुपचाप घर के सब कार्य भी किसी के कहने से पहले ही कर दिया करते थे। पुस्तकों के अभाव के बावजूद पुस्तकों की कोई मांग भी नहीं करते थे।
जब बनवारी सो जाए तो मैं रात में जागकर उसकी पुस्तक अध्ययन कर लूंगा। अभी पुस्तक मागूंगा तो नाहक कश्ट होगा।
इस बीच मामाजी का स्थानान्तरण सीकर हो गया। राजगढ़ के अध्यापकों को दीनदयाल जी के जाने का बहुत दुःख हुआ।
ऐसे विद्यार्थी के जाने से हमें बहुत दुःख हो रहा है। तुम दसवीं के बोर्ड में विद्यालय का नाम रौशन करते।
हुआ भी ऐसा ही। अजमेर बोर्ड की परीक्षा में सभी विशयों में विशेश अंक प्राप्त कर दीनदयाल जी प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम आए।

महाराजा सीकर को यह सूचना हेड मास्टर से मिली। उन्होंने दीनदयाल जी को पुरस्कार हेतु बुलाया।
तुम्हारे माता–पिता क्या करते हैं?
मेरे माता–पिता नहीं हैं। मेरे मामा–मामी ही मुझे पढ़ा रहे हैं। वे ही मेरे माता पिता हैं।
तुम्हें पुरस्कार में क्या चाहिए?
आपका आर्शीवाद।
तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। जितना चाहे पढ़ो। तुम्हें छात्रवृत्ति, स्वर्णपदक के साथ साथ प्रवेश व पुस्तकों का व्यय दिया जाएगा।
कहयोथो ना कि मेरा लाडला खूब पढेगो, देखो ना सबसे अव्वल आयो है, मेरा दीना।

कालेज की पढ़ाई के लिए पिलानी जाने से पूर्व उनकी प्रिय ममेरी बहन रमा खूब रोई।
जीजी रोओ मत, मैं फिर आउंगा।....
महाविद्यालय में दीनदयाल जी के पढ़ने का समय रात्रि के 10 बजे से प्रातः 4 बजे तक रहता था। दिनभर वे अन्य विद्यार्थियों की पढ़ाई में मदद करते थे। दीनदयाल जी के कमरे में अन्य सहपाठी सो रहे हैं।
यहां कोने में लालटेन जलाकर पढ़ना उचित है किसी की नींद खराब नहीं होगी।
मुझसे मदद मांगने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। क्यों न एक एसोसिएशन बना लूं। हां। और उसका नाम रखूंगा 'जीरो एसोसिएशन'।'

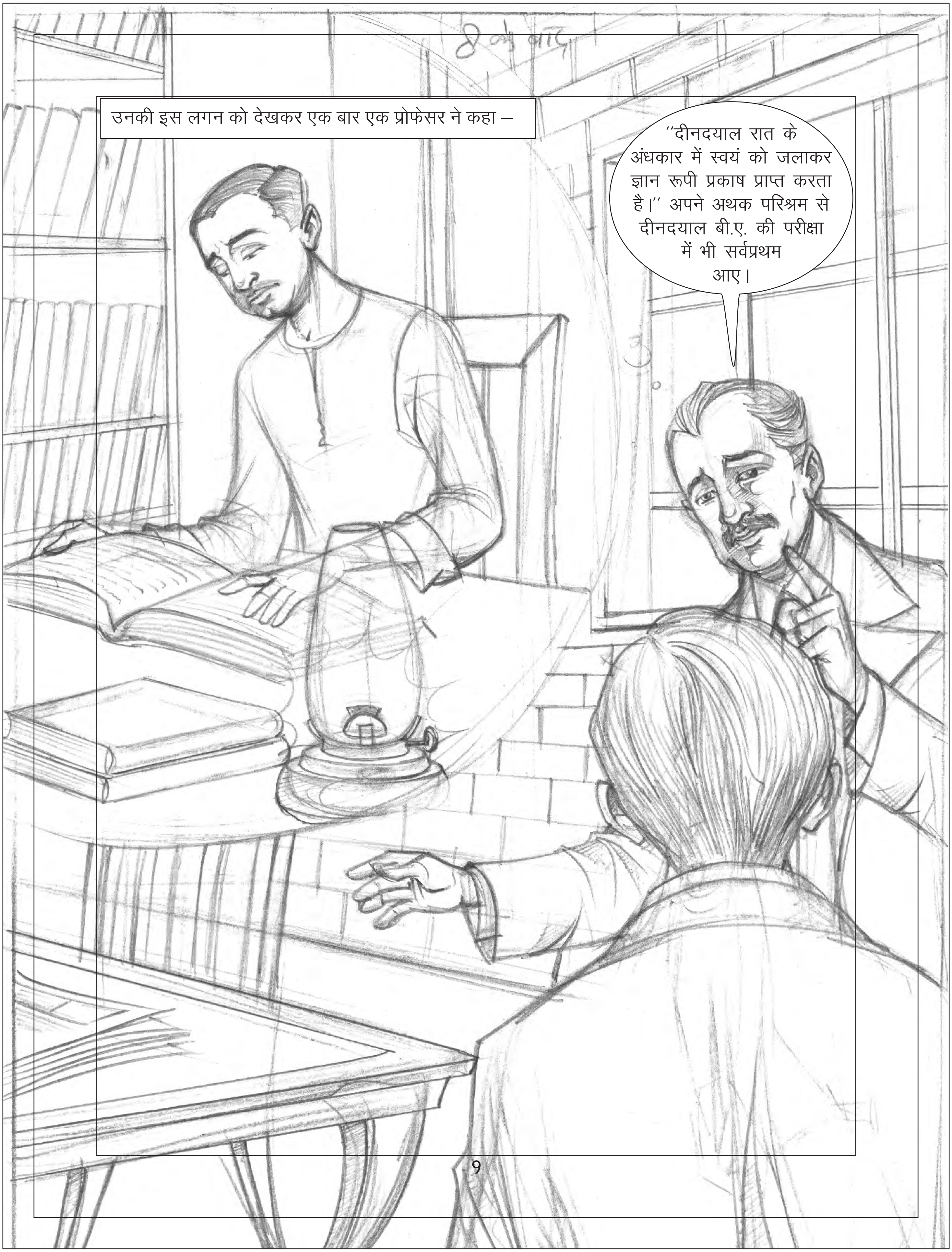
उनकी इस लगन को देखकर एक बार एक प्रोफेसर ने कहा –
''दीनदयाल रात के अंधकार में स्वयं को जलाकर ज्ञान रूपी प्रकाष प्राप्त करता है।'' अपने अथक परिश्रम से दीनदयाल बी.ए. की परीक्षा में भी सर्वप्रथम आए।

उनकी प्रतिभा का समाचार कॉलेज के मालिक श्री घनश्याम दास बिरला के पास पहुंचा।
आज तक कॉलेज में किसी छात्र को इतने अंक प्राप्त नहीं हुए हैं। तुम्हें यह स्वर्ण पदक देते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है। तुम्हें मासिक छात्रवृत्ति और दाखिला एवं किताबों का खर्च भी हमारी ओर से प्राप्त होगा। तुम जब चाहोगे, हमारे यहां अच्छी सी नौकरी भी पा सकोगे।
किन्तु ऐसा समय कभी आया ही नहीं। 1937 में उन्होंने राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश किया। साथ ही बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। इसी बीच उनकी ममेरी बहन रमादेवी बहुत बीमार पड गईं।
मेरे इलाज और सेवा का भार तुम पर ही आन पडा है। तुम्हारी परीक्षा भी नजदीक है। इस तरह से रात दिन जागकर मेरी सेवा करते रहोगे तो पढाई कब करोगे?
तुम चिन्ता मत करो मैं सभी पद्धतियों से तुम्हारी चिकित्सा कराऊंगा। प्राकृतिक चिकित्सा के लिए तुम्हें पहाडों पर भी ले जाऊंगा।
पर हुआ वहीं जो ईश्वर को मंजूर था। रमादेवी बच न पायीं और दीनदयाल जी आंतरिक पीड़ा को सहते परीक्षा में भी न बैठ पाए।

ममेरी बहन की मृत्यु ने दीनदयाल जी को बुरी तरह विचलित कर दिया। वे दुःख और षोक में डूब गए। मामा राधारमण जी उनकी प्रतिभा को नश्ट होते नहीं देख सकते थे।
“तुम भारतीय प्रषासनिक सेवा की परीक्षा की तैयारी करो। मुझे विष्वास है कि पुनः पढ़ाई की ओर ध्यान देने से तुम्हारा दुःख कुछ कम हो जाएगा।
उन्होंने पूरा ध्यान केवल पढ़ाई पर केंद्रित कर लिया। न खाने की सुध न पहनने की। रात दिन किताबों के बीच गुजरने लगे।

उनकी प्रतिभा का समाचार कॉलेज के मालिक श्री घनश्याम दास बिरला के पास पहुंचा।
''मैंने लिखित परीक्षा अच्छे अंकों से उर्तीण कर ली है। अब साक्षात्कार बाकी है।''
मामाजी के विशेश आग्रह पर अनिच्छा के बावजूद वे प्रशासनिक प्रतियोगिता की परीक्षा में बैठे।
सूट पहन के न गया तो इंटरव्यू में बैठने नहीं देंगे। तुरंत दर्जी से सूट सिलवाना पडेगा।

तुम्हारे पास तो सिर्फ धोती कुर्ता है। चिंता मत करो मेरे पास कुछ रूपये एकत्रित हैं। तुम तुरंत सूट सिला लो।
इतनी जल्दी सूट तो मैं तैयार नहीं कर पाया।
चलो ईश्वर ने अच्छा ही किया। स्वदेशी चीजों का उपयोग करने का हम दूसरों को उपदेश देते हैं, तो क्या स्वयं हमें स्वदेशी वस्त्र नहीं धारण करने चाहिए।
(पंडित जी धोती कुर्ता में)
पंडितजी आए हैं। हा हा।

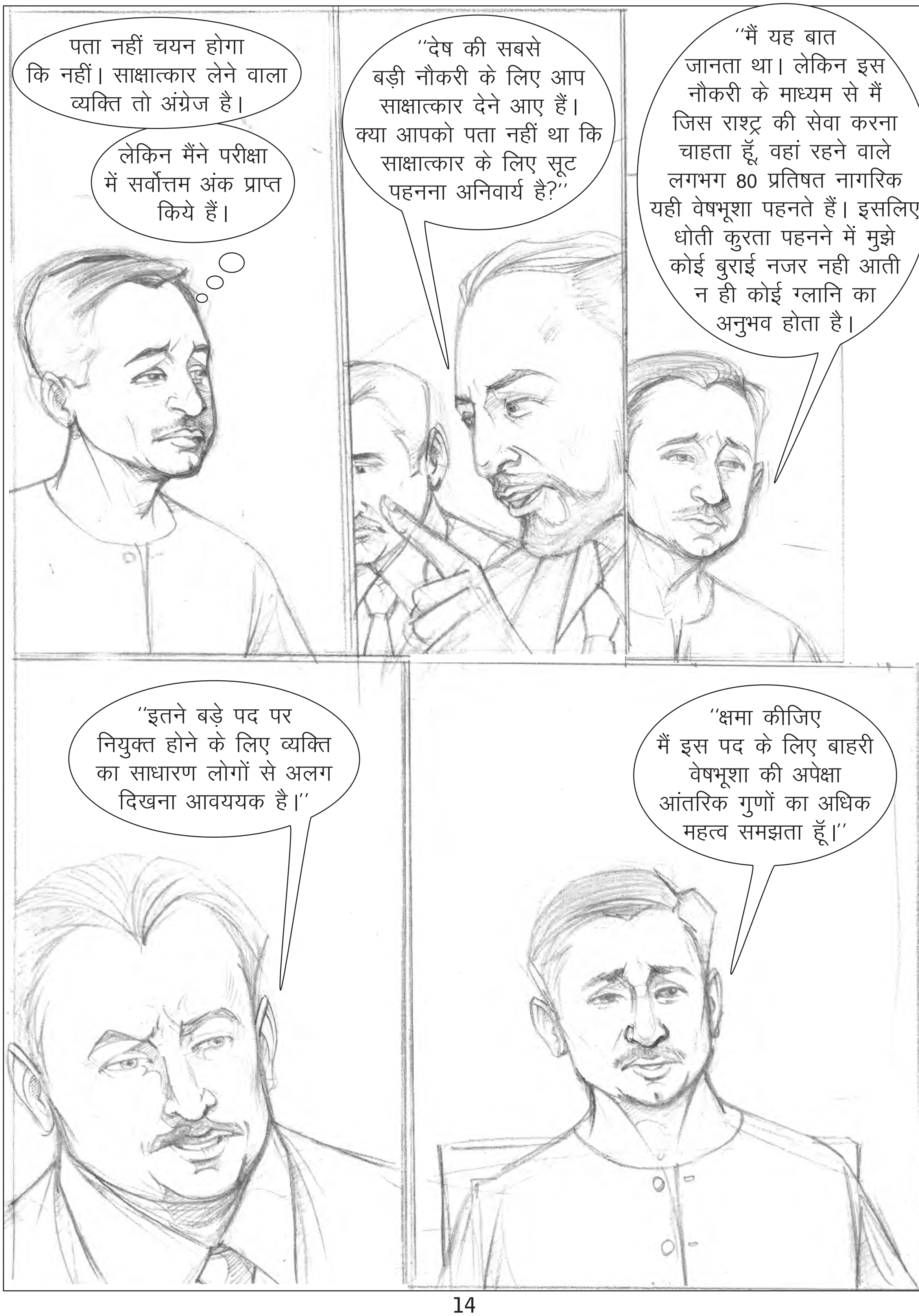
पता नहीं चयन होगा कि नहीं। साक्षात्कार लेने वाला व्यक्ति तो अंग्रेज है।
लेकिन मैंने परीक्षा में सर्वोत्तम अंक प्राप्त किये हैं।
''देष की सबसे बड़ी नौकरी के लिए आप साक्षात्कार देने आए हैं। क्या आपको पता नहीं था कि साक्षात्कार के लिए सूट पहनना अनिवार्य है?''
''मैं यह बात जानता था। लेकिन इस नौकरी के माध्यम से मैं जिस राश्ट्र की सेवा करना चाहता हूॅ, वहां रहने वाले लगभग 80 प्रतिषत नागरिक यही वेषभूशा पहनते हैं। इसलिए धोती कुरता पहनने में मुझे कोई बुराई नजर नही आती न ही कोई ग्लानि का अनुभव होता है।
''इतने बड़े पद पर नियुक्त होने के लिए व्यक्ति का साधारण लोगों से अलग दिखना आवययक है।''
''क्षमा कीजिए मैं इस पद के लिए बाहरी वेषभूशा की अपेक्षा आंतरिक गुणों का अधिक महत्व समझता हूॅ।''

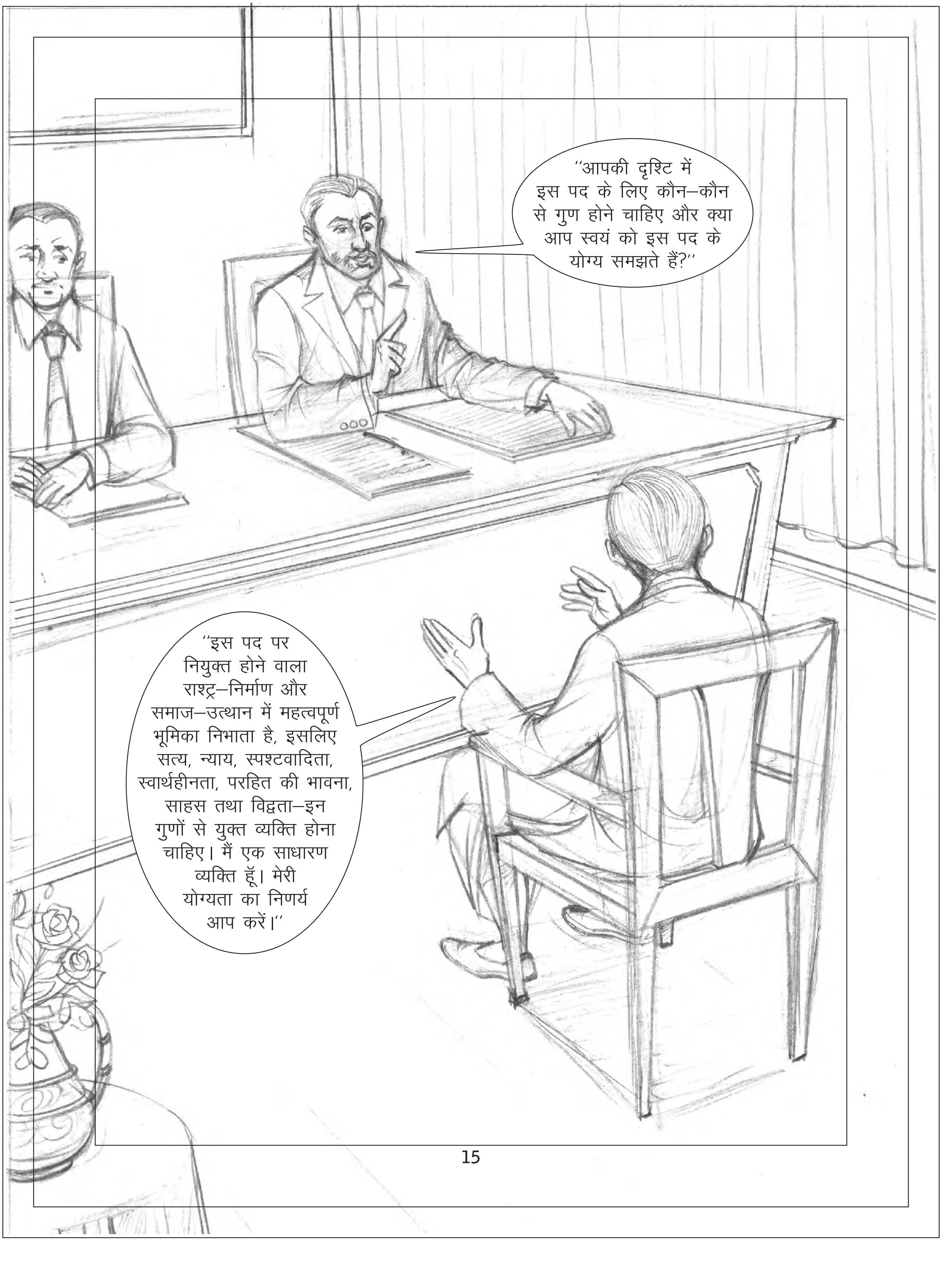
''आपकी दृश्टि में इस पद के लिए कौन–कौन से गुण होने चाहिए और क्या आप स्वयं को इस पद के योग्य समझते हैं?''
''इस पद पर नियुक्त होने वाला राश्ट्र–निर्माण और समाज–उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए सत्य, न्याय, स्पश्टवादिता, स्वार्थहीनता, परहित की भावना, साहस तथा विद्वता–इन गुणों से युक्त व्यक्ति होना चाहिए। मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ। मेरी योग्यता का निणर्य आप करें।''

जब नतीजा आया तो– ''दीनदयाल उपाध्याय का नाम तो तालिका में सबसे ऊपर है। यहां दृष्य में बहुत से उम्मीदवार।''
किंतु नौकरी करना तो उनकी वृत्ति में था ही नहीं। सदा अव्वल आने वाले दीनदयाल ने अपने करियर की चिंता कभी की ही नहीं। उन्होंने अपने ममेरे भाई और मामा को पत्र लिखे–
''प्रिय बनवारी, मैंने एक स्वयंसेवक का जीवन संघ कार्य हेतु चुना है। यह मार्ग कॉटों से परिपूर्ण है, किंतु मैं अपना समस्त जीवन समाज को अपर्ण करना चाहता हूँ। क्या समाज का कार्य एक नौकरी के बराबर भी महत्व नहीं रखता? भावना से कर्त्तव्य ऊंचा है। राश्ट्र कार्य व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर है।
''क्या आप एक बेटा समाज को नहीं दे सकते? संघ के विशय में अधिक जानकारी न होने के कारण आप डर गए हैं। संघ केवल हिंदुओं के संगठन का एवं समाज के पतन को रोकने का काम करता है।'' उन्होंने आगे लिखा–

किन्तु नौकरी न करना तो उनकी वृत्ति में था ही नहीं।
मामाजी आप मुझे प्रयाग में बी.टी. में प्रवेश हेतु एवं छात्रावास में रहने की अनुमति दें। मैं संघ कार्य भी नियमित रूप से करना चाहता हूँ। आपके तीन बेटे हैं। एक बेटे को देश की सेवा के लिए जाने की अनुमति दे दीजिए।

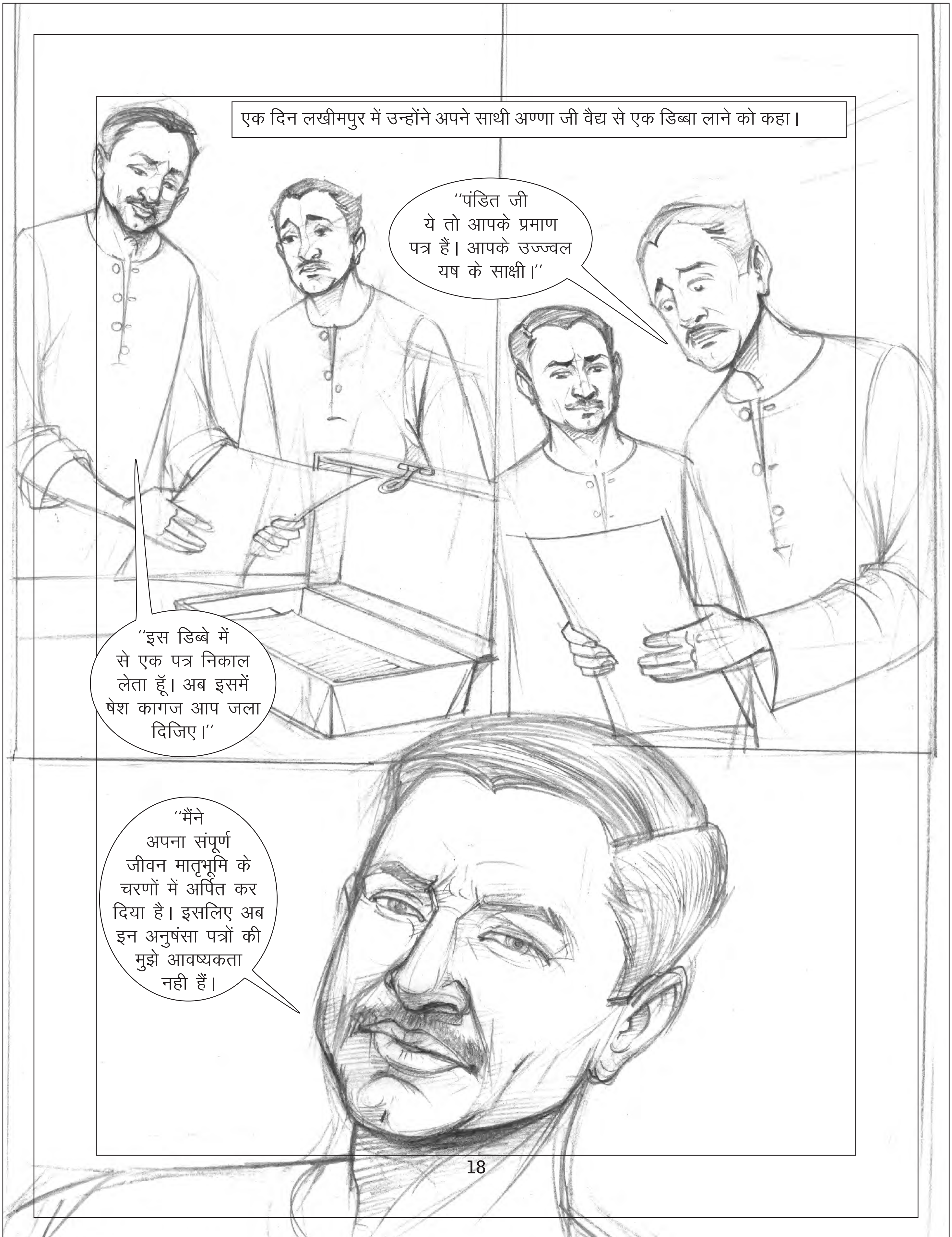

एक दिन लखीमपुर में उन्होंने अपने साथी अण्णा जी वैद्य से एक डिब्बा लाने को कहा।
''पंडित जी ये तो आपके प्रमाण पत्र हैं। आपके उज्ज्वल यष के साक्षी।''
''इस डिब्बे में से एक पत्र निकाल लेता हूँ। अब इसमें षेश कागज आप जला दिजिए।''
''मैंने अपना संपूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया है। इसलिए अब इन अनुषंसा पत्रों की मुझे आवष्यकता नही हैं।

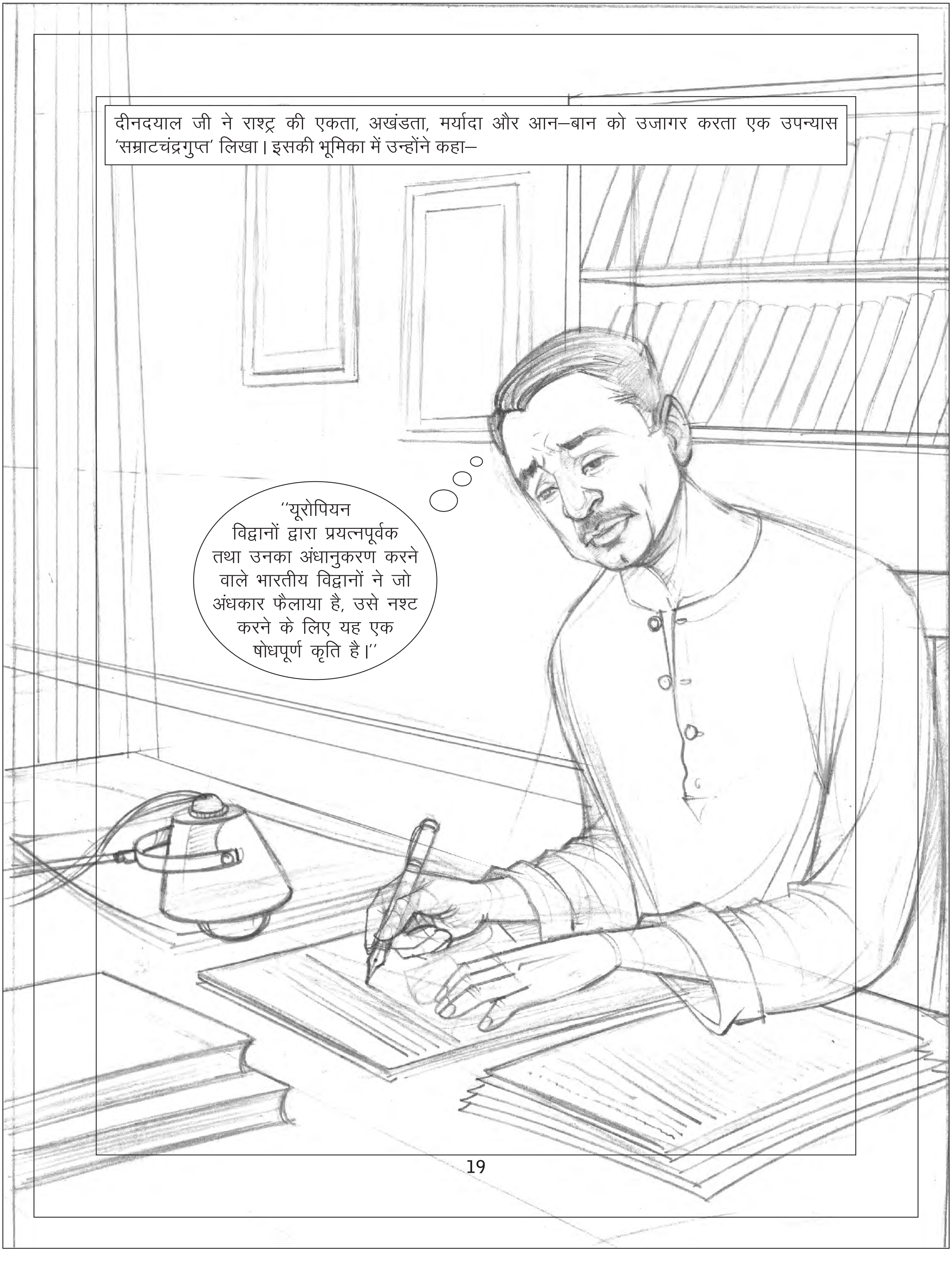
दीनदयाल जी ने राश्ट्र की एकता, अखंडता, मर्यादा और आन–बान को उजागर करता एक उपन्यास 'सम्राटचंद्रगुप्त' लिखा। इसकी भूमिका में उन्होंने कहा–
''यूरोपियन विद्वानों द्वारा प्रयत्नपूर्वक तथा उनका अंधानुकरण करने वाले भारतीय विद्वानों ने जो अंधकार फैलाया है, उसे नश्ट करने के लिए यह एक षोधपूर्ण कृति है।''

‘जगद्गुरू षंकराचार्य’ नामक अपने दूसरे उपन्यास में उन्होंनें भारत को विष्व के पटल पर वहीं स्थान दिलाने का प्रयास किया जो उसे वैदिक युग में प्राप्त था। उन्होंने लिखा–

दीनदयालजी के व्यक्तित्व में समायी महानता का आभास पाना कठिन था। संघ कार्य आरम्भ करने जब वे आगरा में थे। एक दिन सब्जी लेने मित्र नानाजी के साथ बाजार गए।

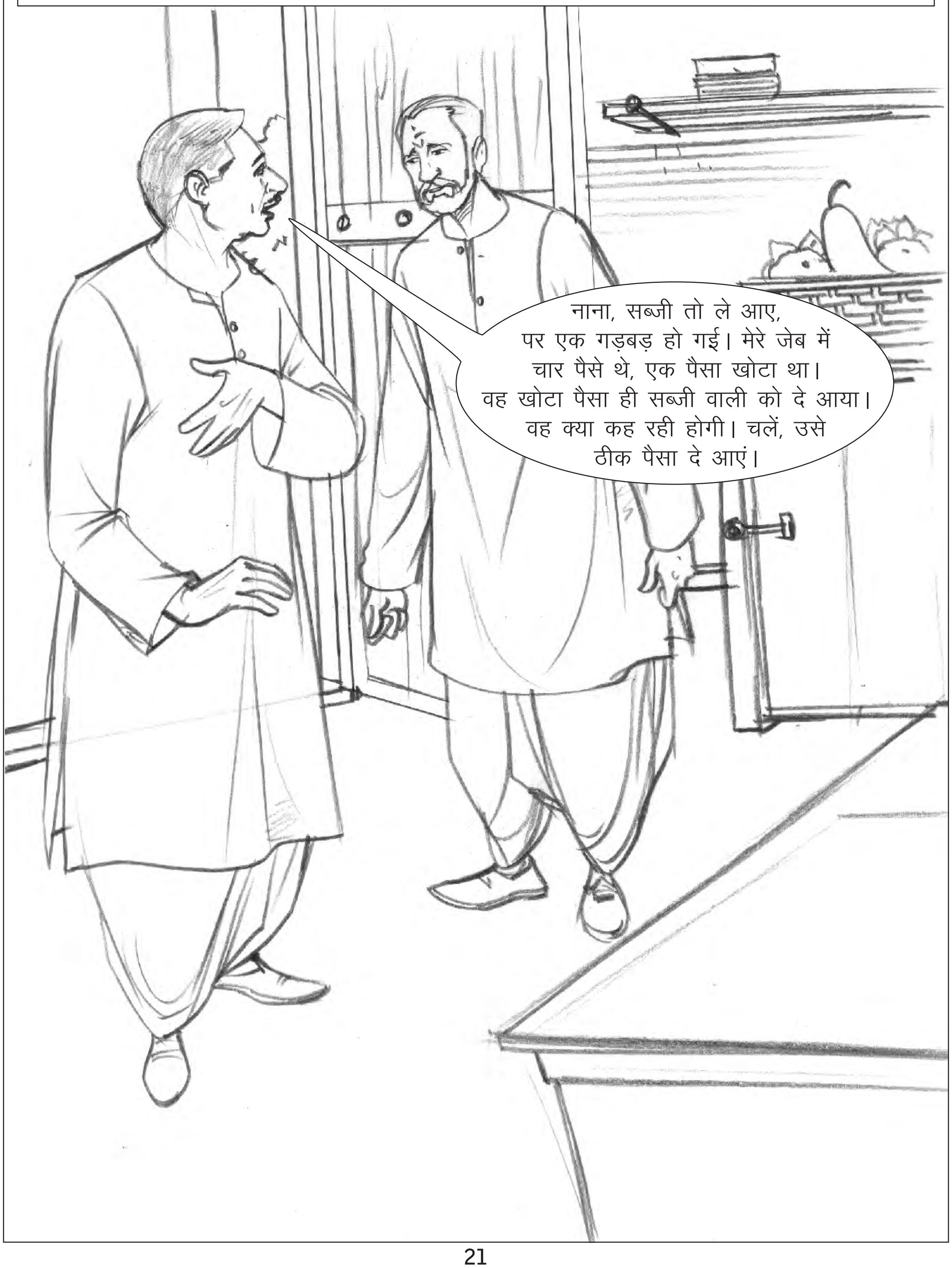

कौन ढूंढेगा अब तुम्हारा खोटा पैसा?
यह देखो, मुझे मिल गया।
बेटा तुम कितने अच्छे हो। भगवान तुम्हारा भला करे।
पंडितजी ने यद्यपि परिवार नहीं बसाया परन्तु उनके संबंध सभी भाई बहनों के साथ मधुर बने रहे। वे देश भर का दौरा करते और जिन स्थानों पर उनके परिवार वालों के घर होते, अवश्य ही उनसे मिलने जाते। परिवार वालों की आंखें अपार हर्श से सजल हो जातीं।
एक बार संगठन कार्य से वे मथुरा पहुंचे। दादियों के पास खबर पहुंची तो आह्लाद से फूली न समायीं।
अरे देखो तो अपना वही दुबला पतला, धोती कुर्ता पहनने वाला दीना आया है। कैसा है, कहां घूमता रहता है?

दादी कुछ खिलाओगी भी कि केवल कुशल ही पूछती रहोगी?
तेरी प्रिय उड़द की दाल बनायी है और दही भी मंगाया है।
देशभर की यात्रा के दौरान वे एकबार दिल्ली स्टेशन पर खड़ी गाड़ी के तृतीय श्रेणी के डिब्बे में बैठे थे। तभी दो भिखारिनें डिब्बे में आयीं।
चोर कहीं की। सभी यात्रियों को परेशान करती हो।
अपनी सीट पर बैठो, मेरे काम में दखल मत दो।
अरे पीटते क्यों हो?

दीनदयालजी में प्रखर प्रतिभा थी। वे जिस क्षेत्र में गये वहां समर्पण भाव से कार्य किया। संघ की शाखाओं में वे प्रेरक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते थे। एक बार वे शाखा में कबड्डी, खोखो आदि प्रतियोगिताएं देख रहे थे। उन्होंने विनोदपूर्वक एक टीम से कहा–

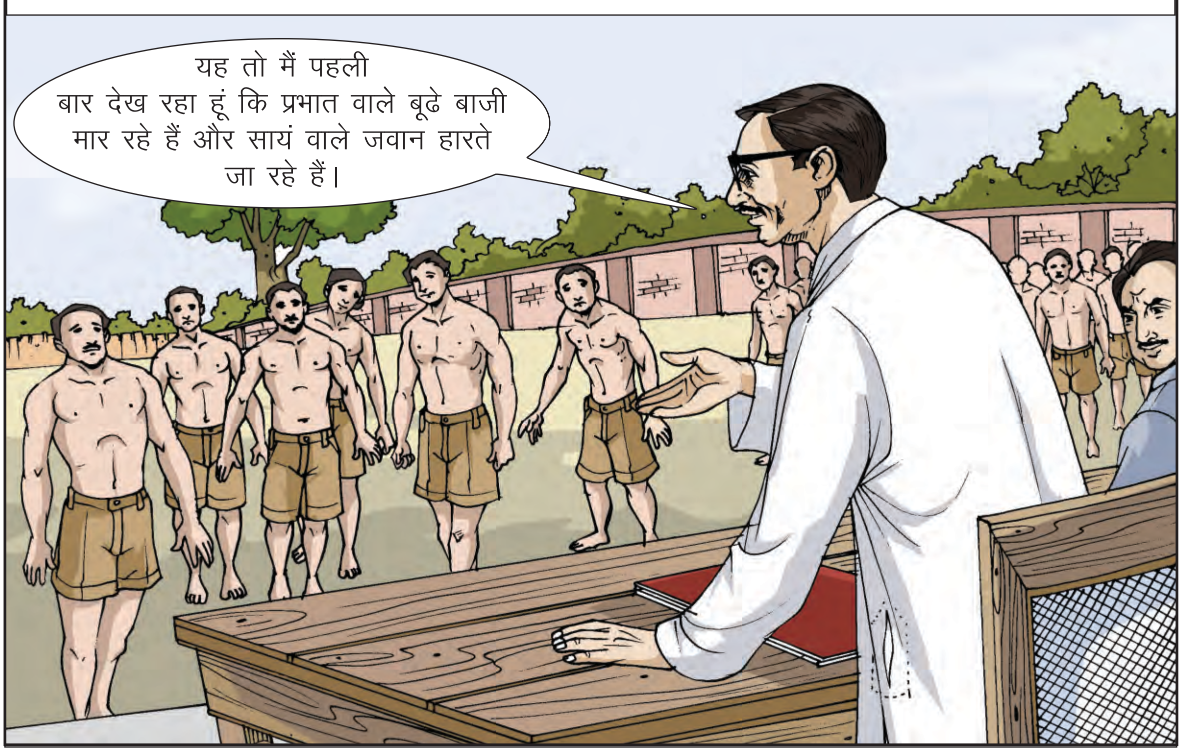

दीनदयालजी यदि आप हमारे पास खड़े हो जाएं तो अंतिम विजय जवानों की ही होगी।
शाबाश जवानों सब कुछ भूलकर जीत के लिए लग जाओ।
आपकी शुभ इच्छाओं के कारण हमारी टोली पर्याप्त अंकों से जीत गयी।
पंडित जी हाथ में झोला लटकाए, बगल में बिस्तर दबाए संघ के किसी भी कार्यालय में पहुंच जाते थे। एक बार लम्बे बाल लिए लखनऊ कार्यालय पहुंचे।
महेश जी, अपना वाला नाई बुलवाओ, इन्हें थोड़ा छोटा कर दूं।
जिससे आप बाल बनवाते हैं, वह तो कहीं चला गया है।

थोडी देर बाद पंडित जी बाल कटा कर आए।
आपने बाल कहां कटवाए? ये तो छोटे, बडे हो गये हैं।
बाल छोटे बडे रह गए तो क्या हुआ। मैंने घुम्मा सैलून में कटवाए है।
यह घुम्मा सैलून कहां है?
अरे जब देखा कि सब सैलूनों पर कई कई लोग जमे हैं तो सडक की पटरी पर बैठे एक नाई के पास चला गया। वहां कोई नहीं था। उसे ग्राहक की जरूरत थी। मुझे बाल कटवाने की।
वे एक उपेक्षित की सहायता करने पर मानसिक शांति का अनुभव कर रहे थे। निःसंदेह वे दीनदयालु थे। बड़े नेता होने के बावजूद देशवासियों के प्रति हमेशा आत्मीयता एवं सेवाभाव का आचरण करते थे।

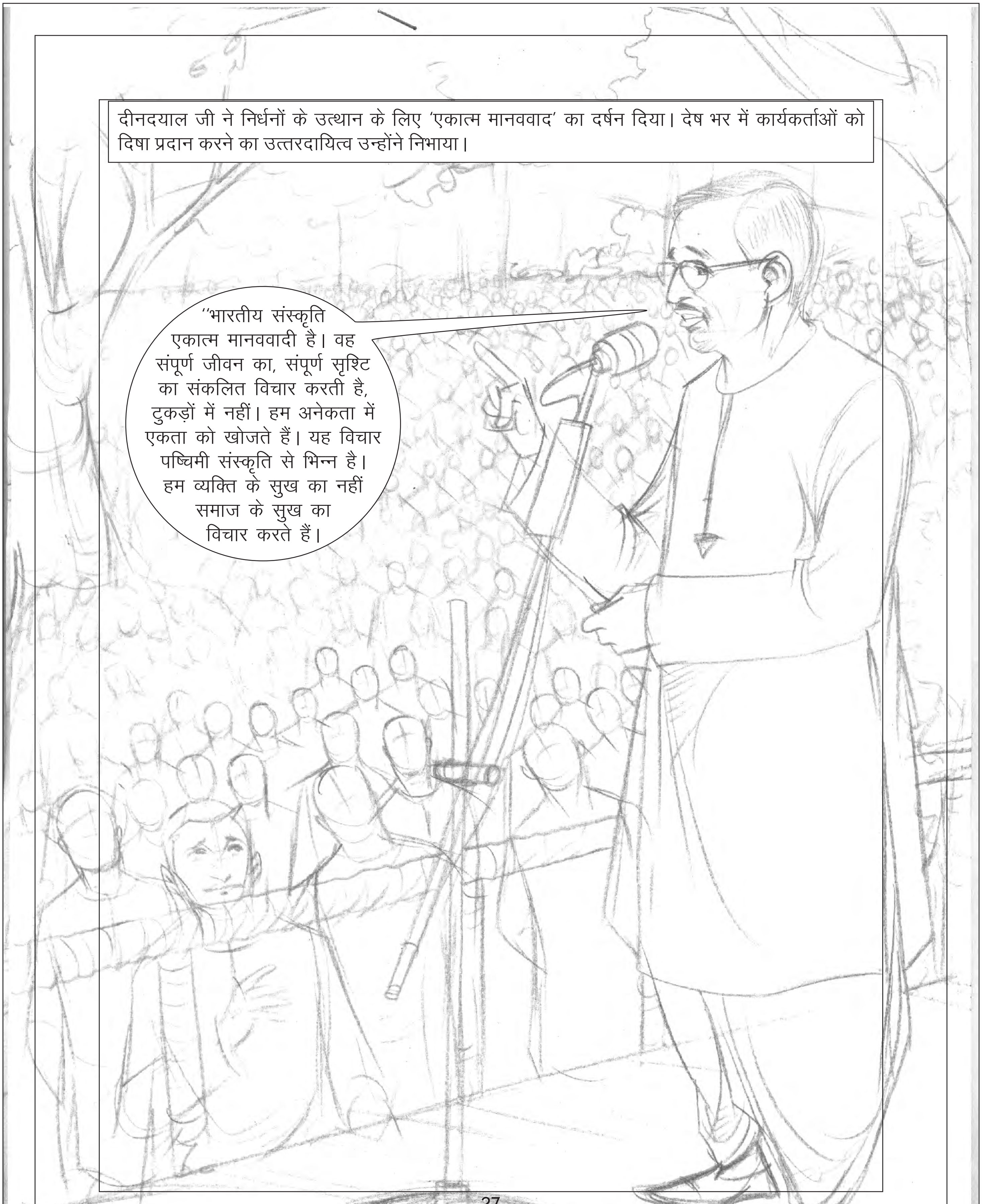
दीनदयाल जी ने निर्धनों के उत्थान के लिए 'एकात्म मानववाद' का दर्षन दिया। देष भर में कार्यकर्ताओं को दिषा प्रदान करने का उत्तरदायित्व उन्होंने निभाया।
"भारतीय संस्कृति एकात्म मानववादी है। वह संपूर्ण जीवन का, संपूर्ण सृश्टि का संकलित विचार करती है, टुकड़ों में नहीं। हम अनेकता में एकता को खोजते हैं। यह विचार पष्चिमी संस्कृति से भिन्न है। हम व्यक्ति के सुख का नहीं समाज के सुख का विचार करते हैं।

उन्हें पूरे उत्तर प्रदेश के संघ कार्य का दायित्व सौंपा गया। एक बार रेलयात्रा के दौरान एक अफसर उनकी सीट के सामने ही बैठा था। डिब्बे में बूट पॉलिश करने वाला एक लड़का चढ़ा।
कपड़ा है साफ करने का?
साहब पॉलिश?
नहीं।
तब जाओ।
बच्चे साहब के जूतों पर भी पॉलिश करो, ये लो कपडा। और इसे संभालकर रखना, बर्ना कितना नुकसान हो रहा था। (अपने बैग से जर्जर तौलिया निकाला, फाडा)
ट्रेन रूकी। दीनदयाल उपाध्याय जिन्दाबाद के नारों के साथ स्वागत करता जनसमूह का दृश्य।
कितना आश्चर्य है। इतना बड़ा नेता और इतनी साधारण वेशभूशा।
वे एक ईमानदार व्यक्तित्व के धनी थे। वे हमेशा तृतीय श्रेणी में ही रेलयात्रा करते थे। एक बार स्थान न मिलने के कारण कार्यकर्ताओं ने द्वितीय श्रेणी में ही उनका बिस्तर लगा दिया। सुबह टी.टी. आया।

मैंने द्वितीय श्रेणी में यात्रा की है तो मैं उसी का ही किराया दूंगा।
श्रीमान् आप जा सकते हैं। कौन जानता है कि आपने द्वितीय श्रेणी में यात्रा की है।
श्रीमान्, अपनी तीस वर्श की नौकरी में आप ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति मिले जो तृतीय श्रेणी के टिकट पर द्वितीय में यात्रा करने पर अतिरिक्त किराया लेने पर जोर दे रहे हैं।

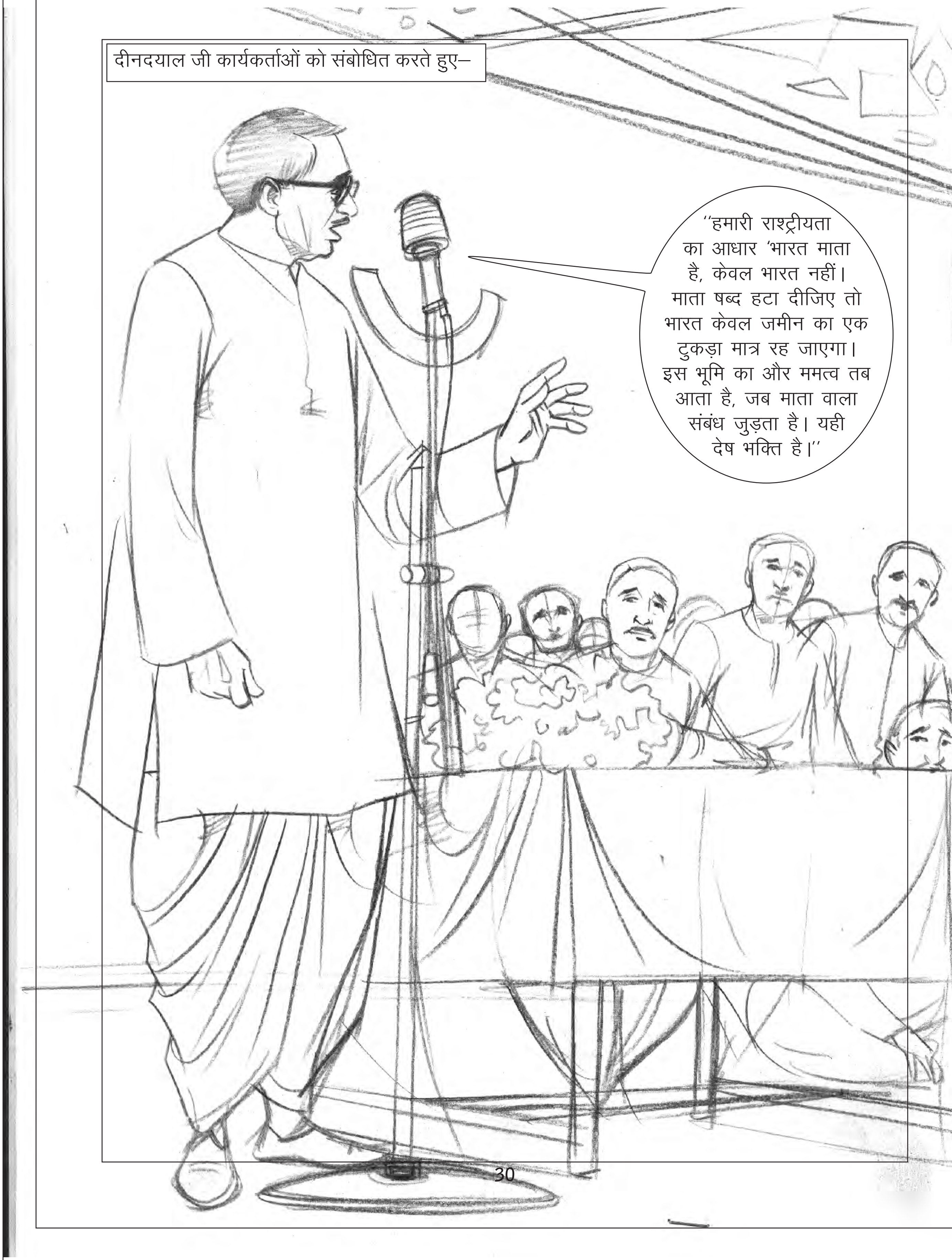
दीनदयाल जी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए–
''हमारी राश्ट्रीयता का आधार 'भारत माता है, केवल भारत नहीं। माता षब्द हटा दीजिए तो भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा मात्र रह जाएगा। इस भूमि का और ममत्व तब आता है, जब माता वाला संबंध जुड़ता है। यही देष भक्ति है।''

दीनदयाल जी जिन आदर्शों के लिए पैदा हुए थे उन्हीं को मूर्त रूप देने के लिए उनका राजनीति में प्रवेश हुआ। उन्होंने व्रत लिया–
देश को स्वाधीनता दिलाने, सर्व सम्पन्न बनाने, शक्तिशाली राश्ट्र के रूप में खड़ा करने और सम्पूर्ण समाज में समरसता लाने के लिए जीवनपर्यन्त मनसा, वाचा, कर्मणा अविराम साधना करूंगा।

उन्हें भारतीय जनसंघ जैसे मजबूत अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन का महामंत्री बनाया गया। कुछ वर्शों पश्चात् वे जनसंघ के अध्यक्ष भी बनाए गए। एक बार एक कार्यकर्ता ने उनसे पूछा–
श्रीमान् आप तो जनसंघ जैसे राजनीतिक संगठन के हैं फिर राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यक्रम में क्यों आए?
देखो मैं पहले संघ का स्वयंसेवक हू। संघ एक परिवार है। परिवार के सर्वश्रेश्ठ अधिकारी तुम्हारे पिताजी हैं। ऐसा मानते हो?
जी
श्रीराम भी तो अपने पिताजी की आज्ञा से 14 वर्श के लिए वनवास गए थे। यह तो अपनी परम्परा है। वहां जंगलों में वनवास था, यहां शहरों में सन्यास है,
हा हा हा।

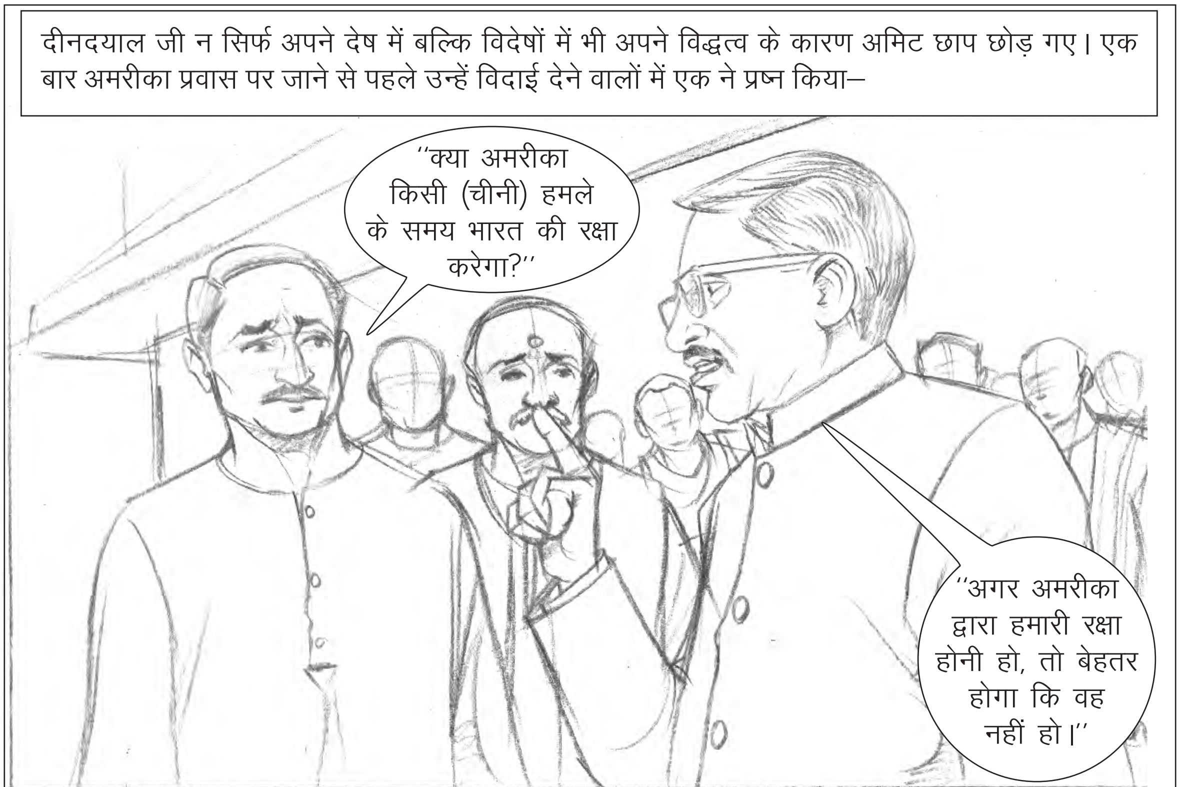
दीनदयाल जी न सिर्फ अपने देष में बल्कि विदेषों में भी अपने विद्धत्व के कारण अमिट छाप छोड़ गए। एक बार अमरीका प्रवास पर जाने से पहले उन्हें विदाई देने वालों में एक ने प्रष्न किया–
''क्या अमरीका किसी (चीनी) हमले के समय भारत की रक्षा करेगा?''
''अगर अमरीका द्वारा हमारी रक्षा होनी हो, तो बेहतर होगा कि वह नहीं हो।''

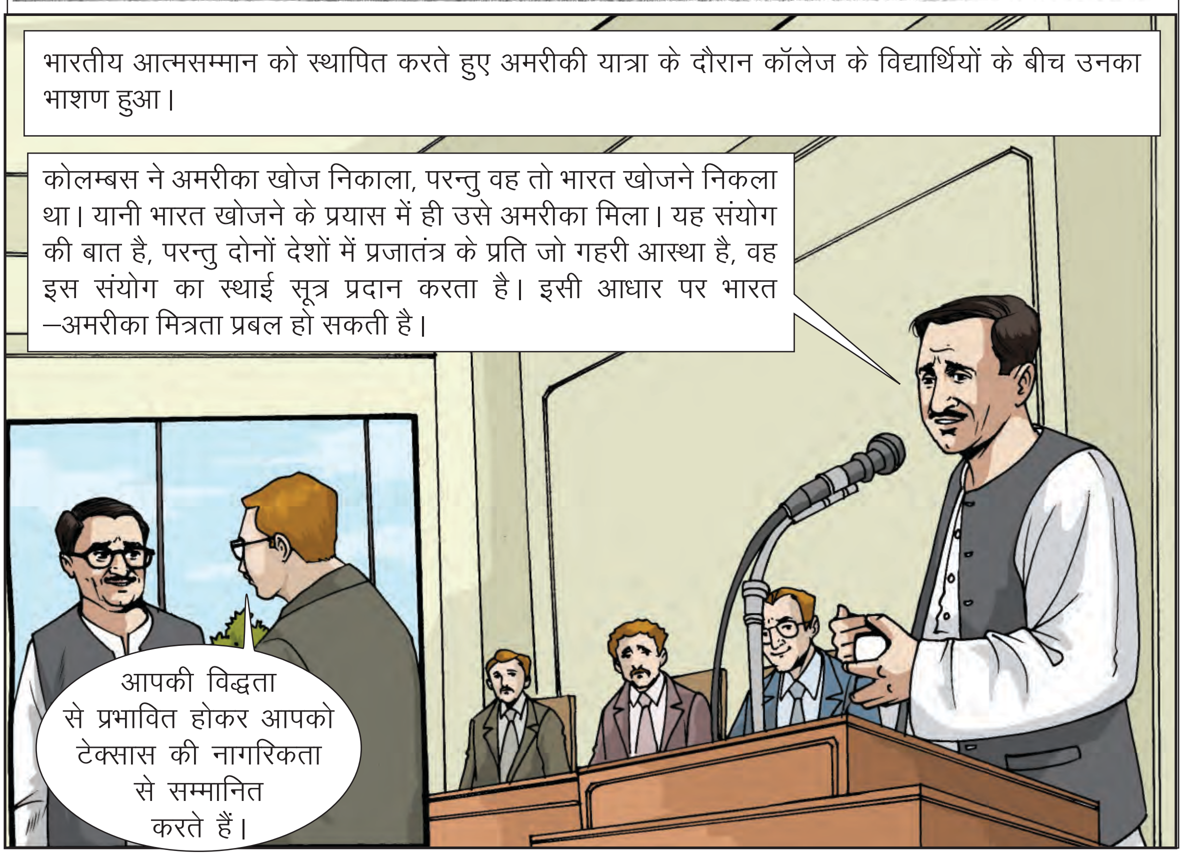
भारतीय आत्मसम्मान को स्थापित करते हुए अमरीकी यात्रा के दौरान कॉलेज के विद्यार्थियों के बीच उनका भाशण हुआ।
कोलम्बस ने अमरीका खोज निकाला, परन्तु वह तो भारत खोजने निकला था। यानी भारत खोजने के प्रयास में ही उसे अमरीका मिला। यह संयोग की बात है, परन्तु दोनों देशों में प्रजातंत्र के प्रति जो गहरी आस्था है, वह इस संयोग का स्थाई सूत्र प्रदान करता है। इसी आधार पर भारत –अमरीका मित्रता प्रबल हो सकती है।
आपकी विद्धता से प्रभावित होकर आपको टेक्सास की नागरिकता से सम्मानित करते हैं।

दीनदयाल जी ने अपने आदर्शों के प्रचार के लिए 'राश्ट्रधर्म प्रकाशन' की नींव डाली। फिर 'पांचजन्य' साप्ताहिक और 'स्वदेश' दैनिक का भी प्रकाशन किया। आप किसी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझते थे।

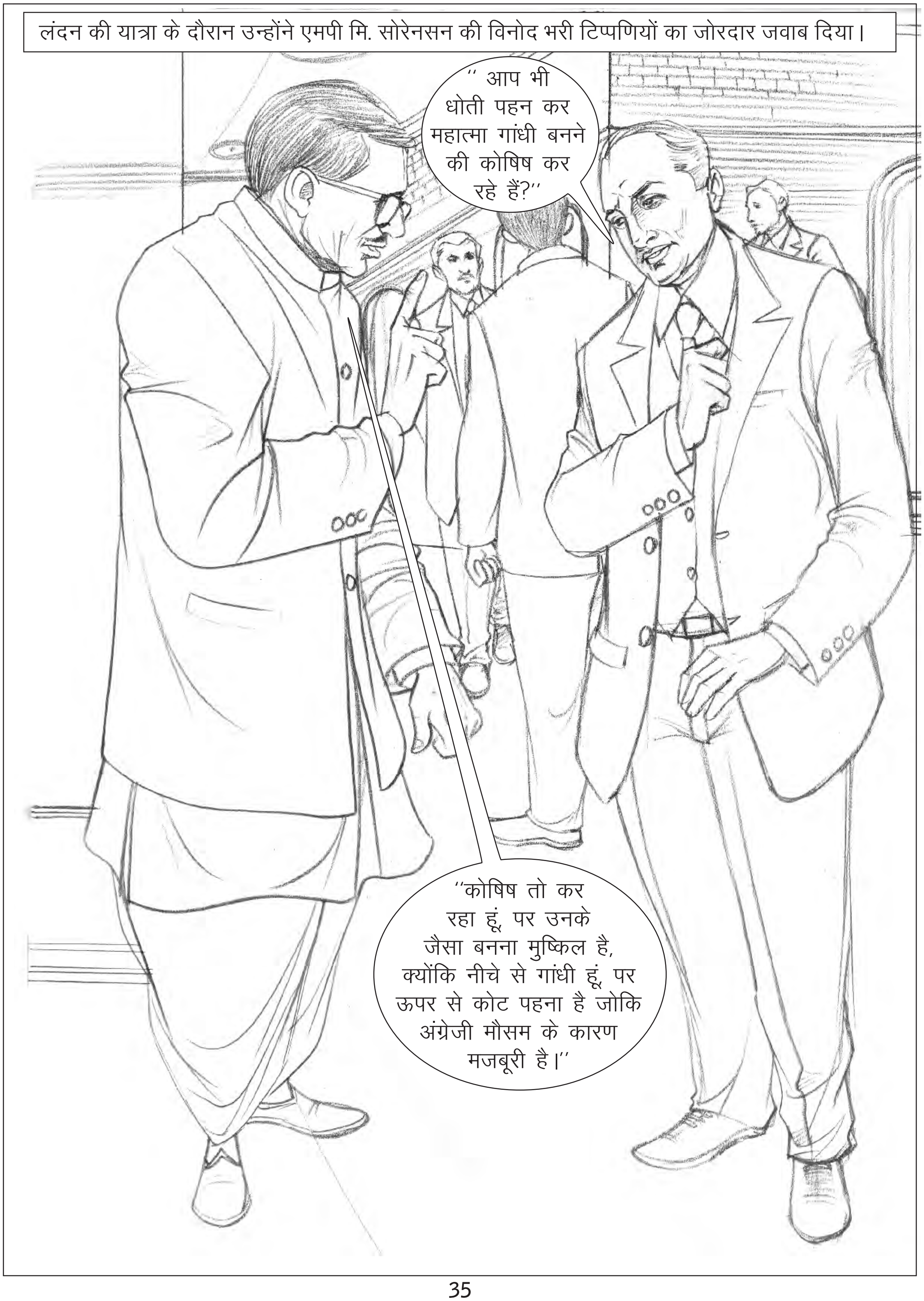
लंदन की यात्रा के दौरान उन्होंने एमपी मि. सोरेनसन की विनोद भरी टिप्पणियों का जोरदार जवाब दिया।
'' आप भी धोती पहन कर महात्मा गांधी बनने की कोषिष कर रहे हैं?''
''कोषिष तो कर रहा हूं, पर उनके जैसा बनना मुष्किल है, क्योंकि नीचे से गांधी हूं, पर ऊपर से कोट पहना है जोकि अंग्रेजी मौसम के कारण मजबूरी है।''

''अंग्रेजी मौसम और अंग्रेज लडकियों से आप न घबराएं तो आपका होषियार होना साबित हो जाएगा।''
मैं अविवाहित हूं। मैंने जीवन भर देष सेवा का व्रत लिया है। जब इतना बड़ा उद्‌देष्य सामने है तो इन चीजों से मैं नहीं घबराता।''
''आपने मेरा दिल जीत लिया।''

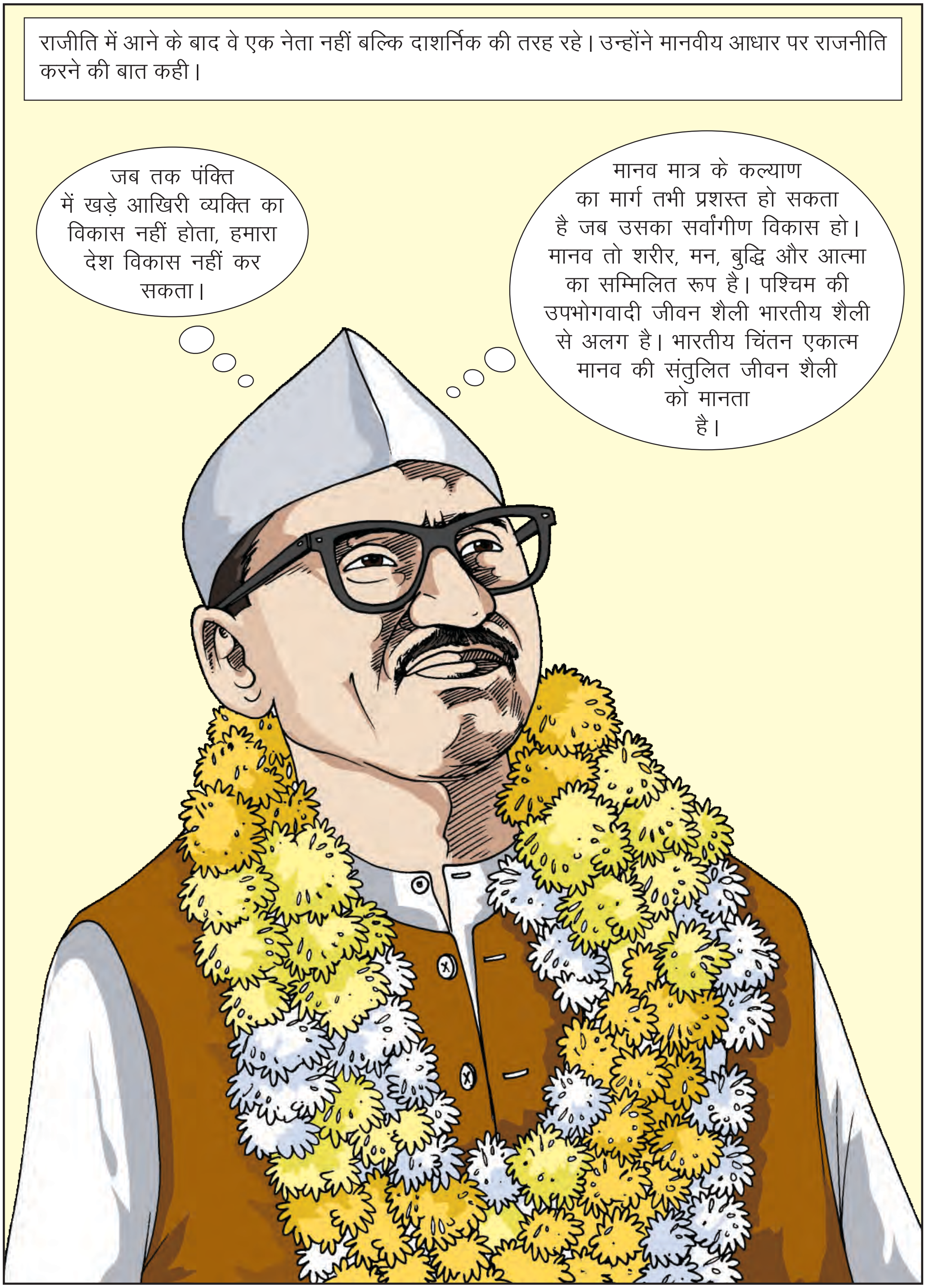
राजीति में आने के बाद वे एक नेता नहीं बल्कि दाशर्निक की तरह रहे। उन्होंने मानवीय आधार पर राजनीति करने की बात कही।
जब तक पंक्ति में खड़े आखिरी व्यक्ति का विकास नहीं होता, हमारा देश विकास नहीं कर सकता।
मानव मात्र के कल्याण का मार्ग तभी प्रशस्त हो सकता है जब उसका सर्वांगीण विकास हो। मानव तो शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का सम्मिलित रूप है। पश्चिम की उपभोगवादी जीवन शैली भारतीय शैली से अलग है। भारतीय चिंतन एकात्म मानव की संतुलित जीवन शैली को मानता है।

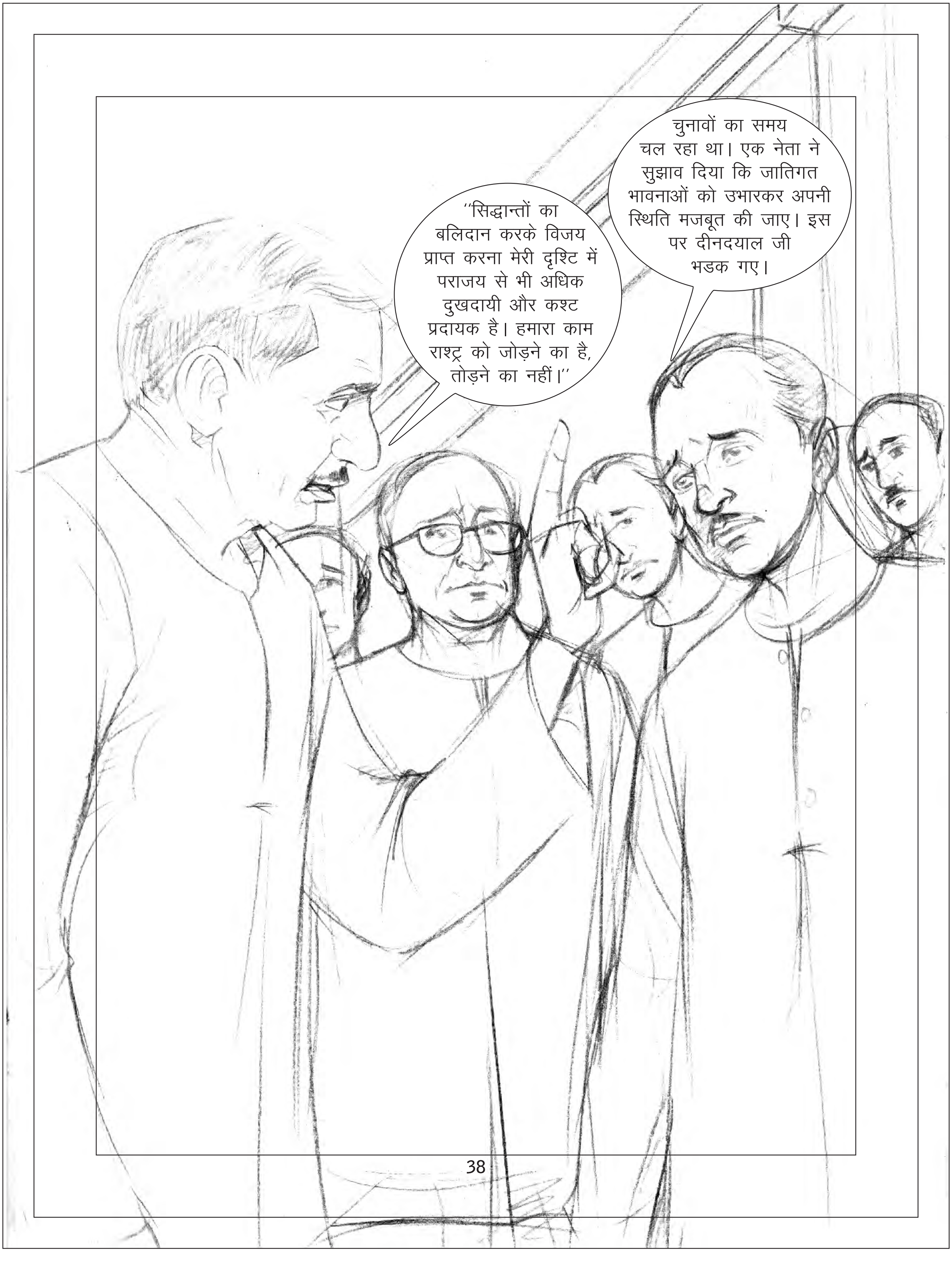
चुनावों का समय चल रहा था। एक नेता ने सुझाव दिया कि जातिगत भावनाओं को उभारकर अपनी स्थिति मजबूत की जाए। इस पर दीनदयाल जी भडक गए।
''सिद्धान्तों का बलिदान करके विजय प्राप्त करना मेरी दृश्टि में पराजय से भी अधिक दुखदायी और कश्ट प्रदायक है। हमारा काम राश्ट्र को जोड़ने का है, तोड़ने का नहीं।''

दीनदयाल जी जहां कार्यकर्ताओं को निरन्तर सेवा के लिए प्रेरित करते थे, वहीं अपने विनोद से सबकी थकान भी दूर कर देते थे। एक बार संघ कार्यालय में–
हमें जम्मू कश्मीर में चल रहे सत्याग्रह से संबंधित समाचारों को देशभर के अखबारों में भेजना है। इसलिए बहुत सारे पते लिखे लिफाफों को तैयार करो।
हॉ, पते तो लिख दिए, अब जल्दी–जल्दी टिकट चिपकाता हूं।
अरे टिकट उल्टी चिपकाओ भाई। तुम अकेले ही समाचार बनाने से लेकर टिकट तक चिपकाने का काम करते हो। अगर टिकटें सीधी चिपकाईं तो लगेगा कि हमारे कार्यालय में चपरासी तक नहीं है।

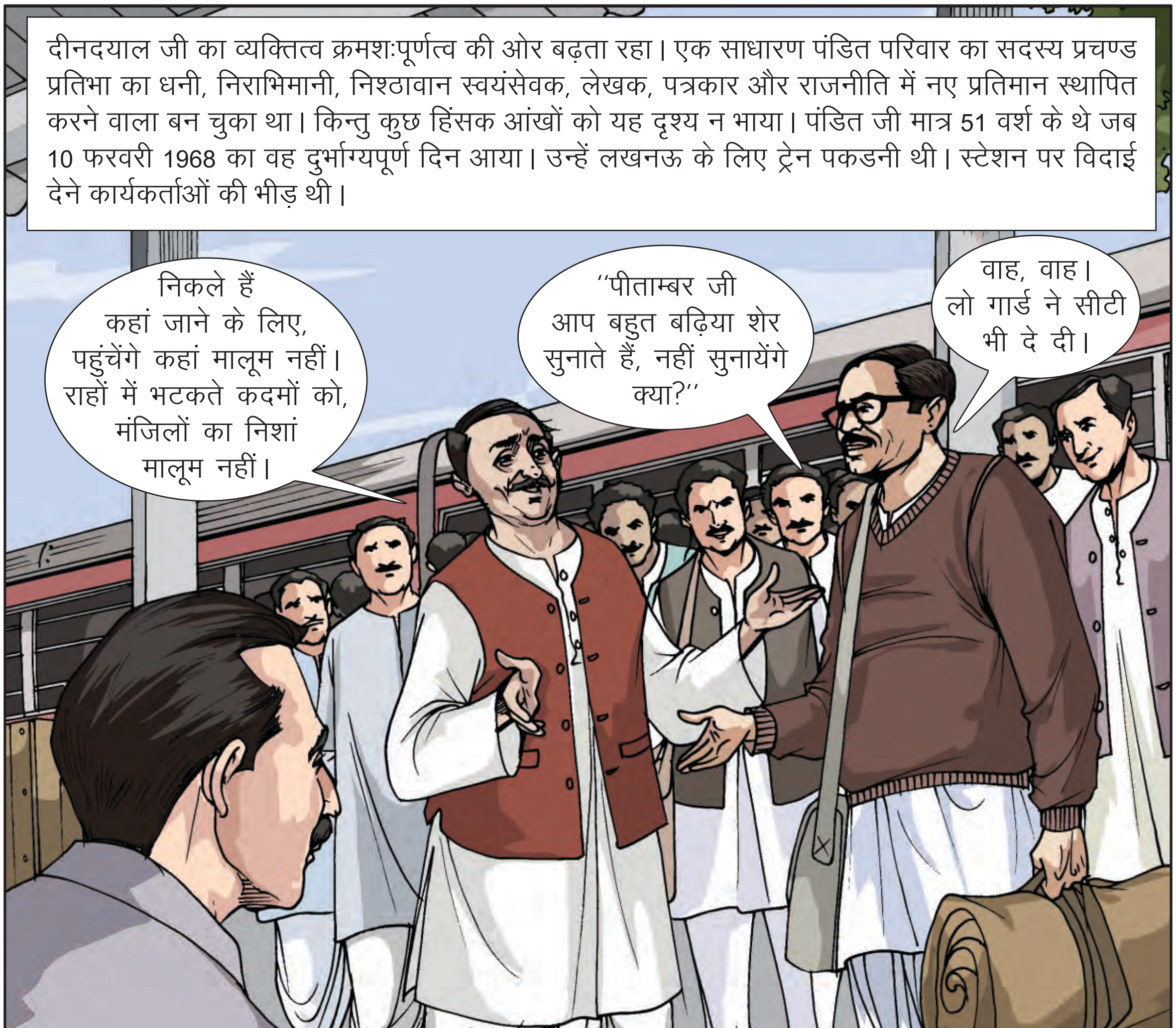
दीनदयाल जी का व्यक्तित्व क्रमशःपूर्णत्व की ओर बढ़ता रहा। एक साधारण पंडित परिवार का सदस्य प्रचण्ड प्रतिभा का धनी, निराभिमानी, निश्ठावान स्वयंसेवक, लेखक, पत्रकार और राजनीति में नए प्रतिमान स्थापित करने वाला बन चुका था। किन्तु कुछ हिंसक आंखों को यह दृश्य न भाया। पंडित जी मात्र 51 वर्श के थे जब 10 फरवरी 1968 का वह दुर्भाग्यपूर्ण दिन आया। उन्हें लखनऊ के लिए ट्रेन पकडनी थी। स्टेशन पर विदाई देने कार्यकर्ताओं की भीड़ थी।
निकले हैं कहां जाने के लिए, पहुंचेंगे कहां मालूम नहीं। राहों में भटकते कदमों को, मंजिलों का निशां मालूम नहीं।
''पीताम्बर जी आप बहुत बढ़िया शेर सुनाते हैं, नहीं सुनायेंगे क्या?''
वाह, वाह। लो गार्ड ने सीटी भी दे दी।

यह दुर्भाग्यपूर्ण सफर उनका अन्तिम सफर साबित हुआ। इसी सफर में उनकी हत्या कर दी गयी।
एक पुरानी कहावत है, ''जिन्हें देवता प्रेम करते हैं, वे कम उम्र में स्वर्ग सिधारते हैं।'' पंडित जी का जीवन एक समर्पित जीवन था। शरीर का कण–कण और जीवन का क्षण–क्षण उन्होंने राश्ट्रदेव के चरणों में चढ़ा दिया। सम्पूर्ण देश उनका घर व सारा समाज उनका परिवार था। उनकी ऑखों में एक ही सपना था– भारत को समृद्धिशील, आधुनिक राश्ट्र बनाना।
समाप्त।

# पं. दीनदयाल उपाध्याय का साहित्य

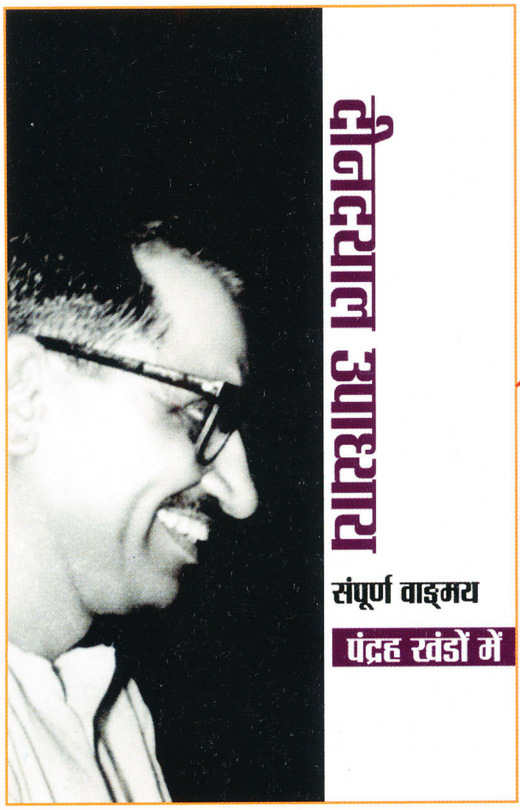


**15**
**खंडों का सैट**
डिमाई आकार के
5300 से अधिक पृष्ठ
दुर्लभ चित्रों के
80 रंगीन पृष्ठ

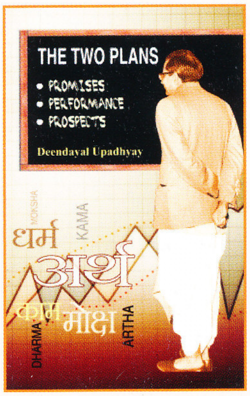


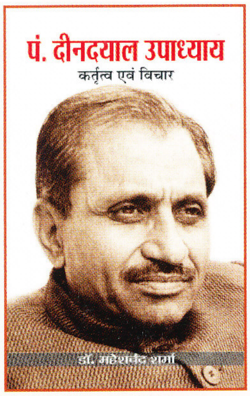


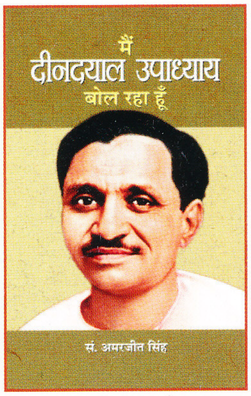


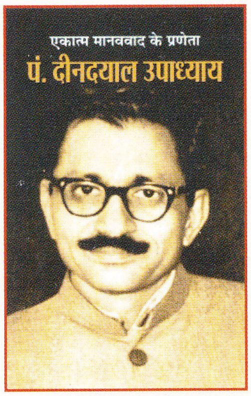


# नानाजी देशमुख का साहित्य

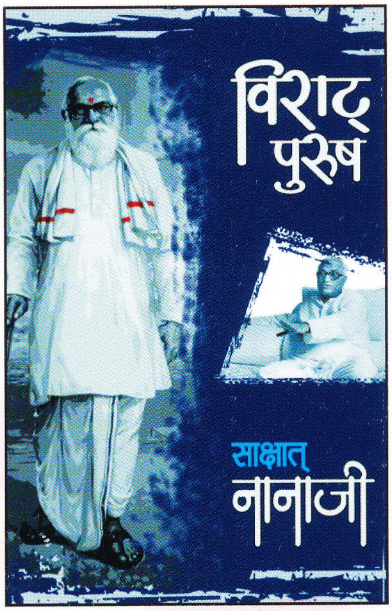


(6 खंडों का सैट)

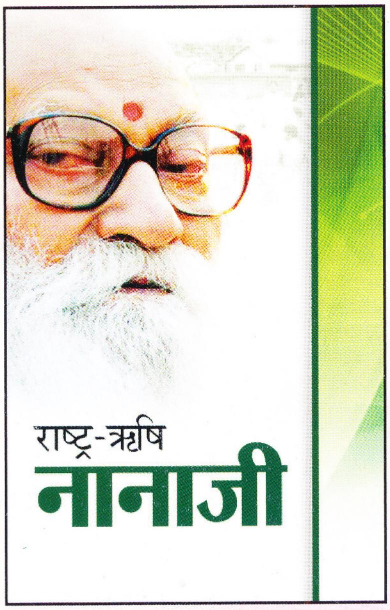


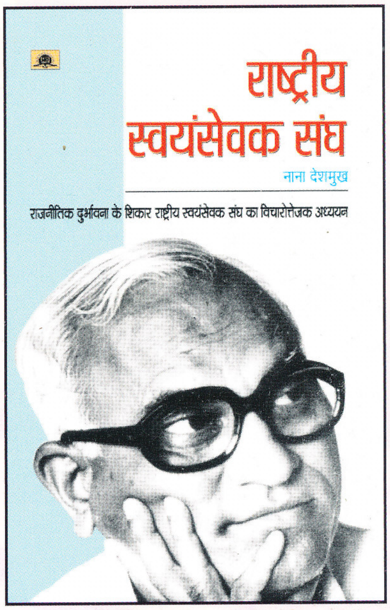

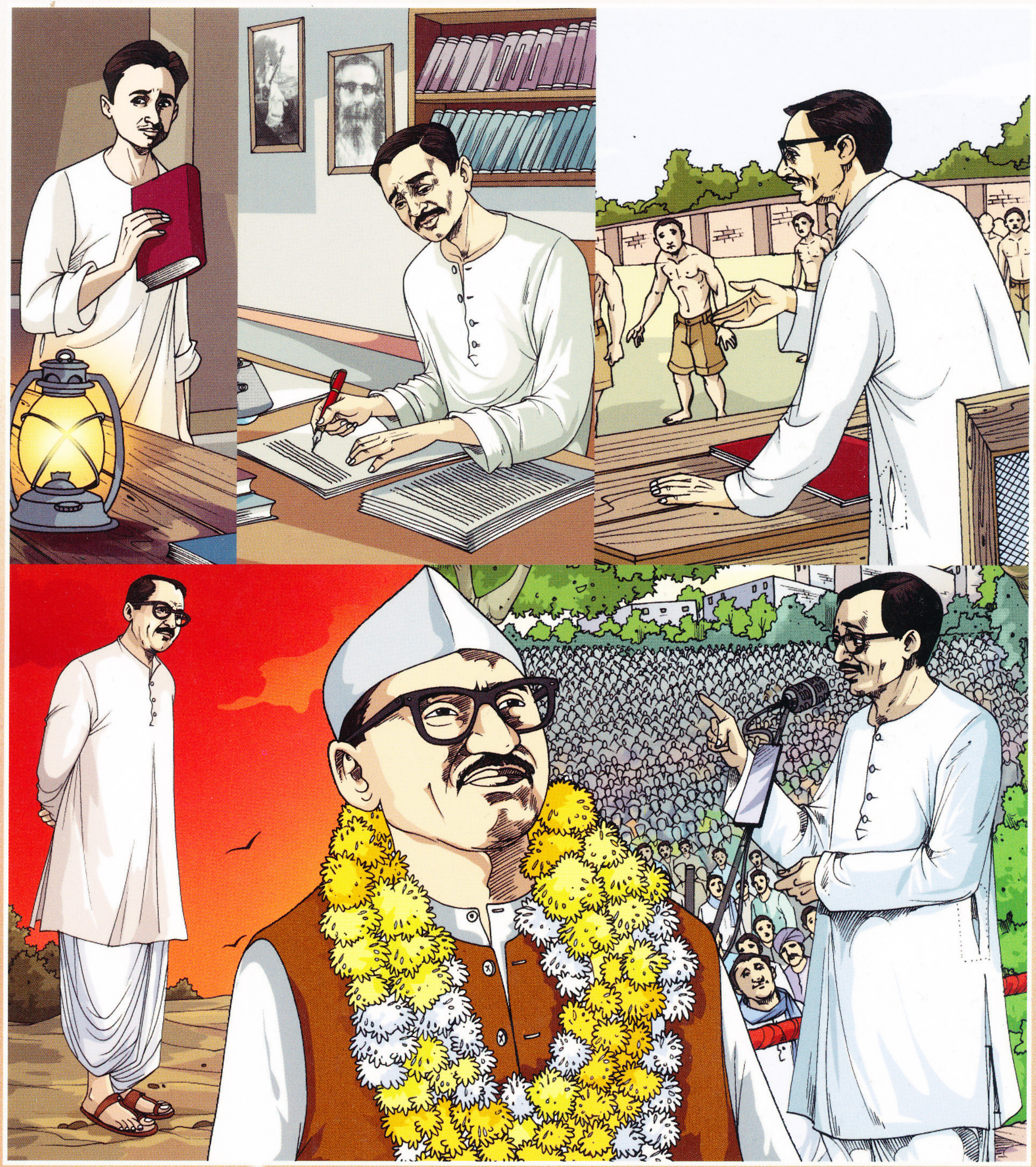


**पं. दीनदयाल उपाध्याय चित्रावली**

**प्रभात प्रकाशन**

**दीनदयाल शोध संस्थान**

4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

संस्करण : प्रथम, 2017 • चित्रांकन : संतोष मिश्रा • मुद्रक : ग्राफिक वर्ल्ड, नई दिल्ली

**PT. DEENDAYAL UPADHYAYA CHITRAWALI**

Published by **PRABHAT PRAKASHAN**, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-110002

**DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE**, Jhandewala Extn., New Delhi-110055

e-mail: prabhatbooks@gmail.com • ISBN 978-93-86300-91-1 • Price : Rs. Eighty only

ISBN 978-93-86300-91-1

9 789386 300911

₹ 80/-